1857- ज़रा याद इन्हें भी कर लो

सुरेश मिश्र
-इतिहासकार और लेखक

पिछले दिनों जब मैंने सागर जिले के एक जिम्मेदार व्यक्ति से पूछा कि क्या सागर जिले में 1857 के महान विद्रोही शाहगढ़ के राजा बखतबली के नाम पर जिले में कोई संस्था, मार्ग या कोई स्मारक है तो उनका जवाब था 'नहीं'। ऐसे ही मैंने जब नरसिंहपुर के एक जिम्मेदार व्यक्ति से पूछा कि क्या 1842 के बुन्देला विद्रोह के सूरमा हीरापुर के हिरदेशाह की याद में आपके जिले में कोई स्मारक या समारोह होता है तो उनका भी जवाब था 'नहीं'। देखा जाए तो मध्यप्रदेश में हुए 1857 के महासंग्राम की जब याद की जाती है तो गिनती के कुछ नाम ही हमें याद आते हैं- रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई लोधी, रीवा के ठाकुर रणमतसिंह, जबलपुर के शंकरशाह और रघुनाथशाह, बस। इनके अलावा किसी अन्य सूरमा की याद कम ही लोगों को होगी।

पिछले बीस साल से मध्यप्रदेश में 1857 में हुए महासंग्राम के सूरमाओं की तलाश मंि राज्य और दिल्ली के अभिलेखागारों के दस्तावेजों का अध्ययन करने पर कम से कम पच्चीस और ऐसे सूरमाओं के कारनामों से संबंधित ढेर सारे दस्तोवज अभिलेखागारों में मिले, जिनके बारे में न तो कभी प्रामाणिक रूप से लिखा गया और न उनकी याद में कोई स्मारक या समारोह उनके जिलों में है।

इन्दौर में ब्रिटिशों के खिलाफ सआदतखान पठान ने सबसे पहले शस्त्र उठाये और वहां क्रान्ति की शुरूआत की। सआदतखान इन्दौर के विद्रोही सैनिकों के लेकर ग्वालियर रवाना हो गए थे। विद्रोह खत्म होने के बाद वे गुमनामी में रहे और अन्त में उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया। यही हाल सआदतखान के सहयोगी भगीरथ सिलावट का हुआ। इन्हें भी देपालपुर के पास मोरवर्दी पहाड़ी में फांसी पर लटका दिया।

धार जिले की अमझेरा रियासत सिंधिया के अधीन थी। वहां के राजा बख्तावरसिंह ने विद्रोह किया और अंग्रेजों की सरदारपुर छावनी तथा भोपावर एजेन्सी को बरबाद कर दिया।

बाद में पकड़े जाने पर उन्हें जेल भेज दिया गया। उन्हें इन्दौर में फांसी दे दी गयी और उनकी लाश को शाम तक टिकटी पर खड़ी रखा गया और उसके बाद ही उनका अन्तिम संस्कार किया जा सका।

शाहगढ़ के राजा बखतबली ने बानपुर के मर्दनसिंह के साथ अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र उठाये और तात्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर संघर्ष किया। फलस्वरूप उनका राज्य जब्त कर लिया गया। समर्पण के बाद उन्हें और मर्दनसिंह को निर्वासित करके लाहौर भेज दिया गया। 1873 में वृद्धावस्था में बखतबली को भारत आने की अनुमति मिली और यहीं उनका निधन हुआ। हिंडोरिया के किशोरसिंह लोधी ने सागर के विद्रोहियों के सहयोग से दमोह जिले में संघर्ष किया।

मुगल राजवंश के 20 साल के शाहजादा फीरोजशाह ने हज से लौटकर दिल्ली जाते समय मन्दसौर को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाया और फिर तात्या टोपे, नाना साहब पेशवा, राव साहब, अवध की बेगम हजरत महल, बरेली के खान बहादुर खान आदि विद्रोहियों के साथ मिलकर अवध, रुहेलखण्ड, बुन्देलखण्ड, राजस्थान में अंग्रेजी सत्ता से टक्कर लेते रहे। वे युद्ध कौशल और बहादुरी में तात्या टोपे के समकक्ष माने जाते थे। जब भारत में विद्रोह समाप्त हो गया तो वे अफगानिस्तान, तुर्की, ईरान जाकर वहां के शासकों से अंग्रेजों के खिलाफ सहायता पाने की कोशिश की। इसमें उन्हें कामयाबी नहीं मिली और मक्का में अंधे और लंगड़े होकर गरीबी में उनकी दुखद मौत हो गयी।

रीवा के इलाके में रणमतसिंह तो सक्रिय थे ही और उन्हें राजा के छल का शिकार होना पड़ा। उनके अलावा रीवा के धीरसिंह बघेल ने भी शस्त्र उठाये और बाद में निर्वासित जीवन बिताने के लिये बाध्य हुए। इसी प्राकर अजयगढ़ के फरजन्द अली की गतिविधियां अंग्रेजों को परेशाान करती रहीं। छतरपुर के दिमान देसपत बुन्देला लम्बे समय तक संघर्ष करते रहे। रीवा के धीरसिंह बघेल भी विद्रोह में सक्रिय रहे। विन्ध्यप्रदेश के सोहागपुर के गरुलसिंह अन्त तक रामगढ़ की वीर रानी अवन्तीबाई लोधी का साथ देते रहे।

निमाड़ में भी भील नायकों के विद्रोह की सरगर्मी रही। बड़वानी के काज्या नायक संघर्ष करते हुए एक परिचित के विश्वासघात से मारे गए और भील विद्रोही भीमा नायक को कालेपानी में आखिरी दिन बिताने पड़े। उनके अलावा बड़वानी जिले में सीताराम कंवर और रघुनाथंसिह मण्डलोई भिलाला विद्रोह का अलख जगाते रहे।

प्रदेश के उत्तरी हिस्से में दबोह के दौलतसिंह कछवाहा ने भिण्ड जिले में सिंध और पहूज के बीहड़ों में अलख जगाते रहे और उधर दतिया जिले में सेंवढ़ा के राव खलकसिंह दौआ ब्रिटिशों के लिए संकट पैदा करते रहे। भाण्डेर के उमरावसिंह सूबेदार, हीरापुर के मेहरबानसिंह लोधी और शाहगढ़ के बोधन दौआ की भी ऐसी ही कुछ कहानी है। ग्वालियर के महादेव शास्त्री जब नाना साहब पेशवा के पत्र मध्यभारत के विद्रोही नायकों को पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे तब उन्हें पकड़ लिया गया और फांसी की सजा दे दी गई। मालवा में महीदपुर के सदाशिवराव अमीन की विद्रोहात्मक गतिविधियों के कारण उन्हें तोप से उड़ा दिया गया।

भोपाल के पास के गढ़ी-अम्बापानी के नवाबबंधु आदिल मोहम्मद खान और फाजिल मोहम्मद खान सआदतखान के साथ मिलकर संघर्ष करते रहे। फाजिल मोहम्मद खान को अन्य कई लोगों के साथ राहतगढ़ के घेरे के बाद सर ह्यू रोज ने फांसी पर चढ़ा दिया लेकिन आदिल मोहम्मद आगे भी एक दशक तक संघर्षरत रहे और फिर गुमनामी में चले गए। विजयराघवगढ़ के युवा राजा सरजू प्रसाद को विद्रोह खत्म होने पर बन्दी बनाकर रंगून रवाना किया गया लेकिन उन्होंने रास्ते में ही अपमान से बचने के लिए आत्मघात कर लिया। राघोगढ़ की छोटी सी रियासत के राजा दौलतसिंह ने भी विद्रोह किया लेकिन परास्त होने के बाद उन्हें तो फांसी दे दी गयी तथा उनकी रियासत को देवास की दोनों रियासतों को बांट दिया गया। भोपाल के वारिस मोहम्मद खान इन्दौर के सआदतखान के साथ सक्रिय रहे और अन्त में उन्हें फांसी दी गयी।

आइये, हम आजादी की पचहत्तरवीं सालगिरह पर आजादी के इन सूरमाओं की याद कर लें और उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए कुछ पहल करें।